موضوع الخطبة :الإيمان بالكتب

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/ حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم :فيض الرحمن التيمي (@Ghiras_4T)

शीर्षक:

आकाशीय पुस्तकों पर ईमान

إن الحمد لله نحمده ، ونستعينه، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا ومن سيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له، وأشهد أن محمدا عبده ورسوله.

- प्रशंसाओं के पश्चात!ए मुसलमानों!में आप लोगों को और स्वयं को अल्लाह का तक़वा अपनाने की वसीयत करता हूं और अल्लाह का यह आदेश समस्त पूर्व एवं पश्चात के लिए है।अल्लाह का कथन है:

(ولقد وصينا الذين أوتوا الكتاب من قبلكم وإياكم أن اتقوا الله) (النساء:131)

अर्थात:"और निसंदेह हमने उन लोगों को जो तुम से पूर्व पुस्तक दिए थे और तुमको भी यही आदेश किया है कि अल्लाह से डरते रहो"

अल्लाह का तक़वा(धर्मनिष्ठा) अपनाओ और उससे डरते रहो,उसकी आज्ञाकारिता करो और उसके अवज्ञा से बचो,जानलो कि आकाशीय पुस्तकों पर ईमान लाना इस्लाम धर्म के सिद्धांतों एवं नियमों का मौलिक भाग है और ईमान का तृतीय स्तंभ है और अल्लाह तआ़ला ने अपने जीव जंतुओं पर कृपा करते हुए और उनके मार्गदर्शन के लिए प्रत्येक संदेशवाहकों के साथ एक पुस्तक भेजी ताकि वह दुनिया एवं आखिरत की शुभकामनाओं को प्राप्त कर सकें,अल्लाह का कथन है:

﴿لقد أرسلنا رسلنا بالبينات وأنزلنا معهم الكتاب والميزان﴾ (الحديد: 25)

अर्थात:"निसंदेह हमने अपने संदेशवाहकों को स्पष्ट प्रमाण देकर भेजा और उनके साथ पुस्तक और मीज़ान(तराजु)नाजिल फरमाया"।

- निसंदेह अल्लाह तआ़ला ने नाजिल की गई समस्त पुस्तकों पर ईमान लाने को वाजिब(अनिवार्य) कर दिया है,अल्लाह का कथन है:

﴿قولوا آمنا بالله وما أنزل إلينا وما أنزل إلى إبراهيم وإسماعيل وإسحاق ويعقوب والأسباط وما أوتي موسى وعيسى وما أوتي النبيون من ربهم لا نفرق بين أحد منهم ونحن له مسلمون﴾(البقرة:136)

अर्थात:"ए मुसलमानो!तुम कहो कि हम अल्लाह पर ईमान लाए और उस चीज पर जो हमारी ओर उतारी गई और जो चीज इब्राहीम,इस्माईल,इस्हा़क़,याकूब (अलैहिमुस्सलाम),और उनके संतानों पर उतारी गई,और जो कुछ अल्लाह की ओर से मूसा एवं ईसा(अलैहिमास्सलाम) और अन्य संदेशवाहकों(अलैहिमुस्सलाम) को दिए गए,हम उनमें से किसी के बीच कोई अंतर नहीं करते और हम अल्लाह के आज्ञाकारी हैं।"

- **ए मोमिनों!पुस्तकों पर ईमान लाना सात मामलों पर निर्मित है:**(इब्ने ओसेमीन रहीमहुल्लाह की पुस्तक"शरहो सलासते अलउसूल"पृष्ठ:94 को देखें।)

प्रथम:इस बात पर ईमान लाना कि अल्लाह की ओर से जो पुस्तकें नाजिल कि गई हैं वे सत्य हैं जैसा कि अल्लाह ने मोमिनों के गुण बताते हुए कहा है:

﴿آمن الرسول بما أنزل إليه من ربه والمؤمنون كل آمن بالله وملائكته **وكتبه** ورسله﴾(البقرة:285)

अर्थात:"रसूल ईमान लाया उस चीज पर जो अल्लाह की ओर से उसकी ओर उतरी और मोमिन भी ईमान लाए,यह सब अल्लाह तआ़ला,उसके देवदूतों,उसकी पुस्तकों और उसके संदेशवाहकों पर ईमान लाए।"

पुस्तकें **वह्य**के माध्यम से नाजिल होती थीं,निसंदेह अल्लाह तआ़ला ने आकाश से धर्ती पर **वह्य**लाने के लिए विशेष देवदूत को पुस्तकों की **वह्य**की और वह जिबरईल

अलैहिस्सलाम हैं।फिर जिबरईल अलैहिस्सलाम ने प्रत्येक संदेशवाहक को उनकी विशेष पुस्तक **वह्य**की।

2.पुस्तकों पर ईमान लाने में जो चीज़ें शामिल हैं उनमें दूसरी चीज यह है कि उन पस्तकों पर ईमान लाना जिन के नाम हमें मालूम हैं,और वह छे हैं:इब्राहीम व मूसा के गण्रथों,तौरैत जो मूसा अलैहिस्सलाम पर नाजिल हुई,इन्जील जो ईसा अलैहिस्सलाम पर नाजिल हुआ,ज़बूर जो ईसा अलैहिस्सलाम को दिया गया और कुरान जो मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नाजिल हुआ।कुछ विद्धानों का कहना है कि मूसा के गण्रथ का मतलब तौरात है,तो प्रकार पांच हो जाएंगे।और रही वे पुस्तकें जिन के नामों का उल्लेख नहीं आया है तो उन पर हम पूर्ण रूप से ईमान लाते हैं।

3.**तीसरी वह चीज जो पुस्तकों पर ईमान लाने में शामिल है वह यह** कि पैगंबरों पर नाजिल कि हुई असल पुस्तकों पर ईमान लाना,न कि उन पुस्तकों पर जिन में हैरफैर कर दी गई। उदाहरण स्वरूप हम उस तौरात पर ईमान लाते हैं जो अल्लाह तआ़ला ने मूसा अलैहिस्सलाम पर नाजिल फरमाई और उस इन्जील पर ईमान लाते हैं जो मसीह़ ईसा बिन मरयम अलैहिमस्सलाम पर नाजिल फरमाई अतः यही असल तौरात और असल इन्जील है,और जो पुस्तकें अभी यहूदी एवं ईसाई के हाथों में हैं वे असली तौरात एवं इन्जील नहीं हैं जो अल्लाह तआ़ला ने मूसा और ईसा अलैहिमस्सलाम पर नाजिल पर नाजिल फरमाईं,अगरचे उनलोगों ने उन पुस्तकों के नाम भी वही रख दिए,बल्कि अहले किताब(यहूदी एवं ईसाई)के हाथों में अभी जो पुस्तकें हैं वे उन लोगो के लेख हैं जिनको उन्होंने अपने से पूर्व लोगों से सुन रखा है और उनमें कुछ सही और कुछ बातें गलत हैं।फिर बाद के लोगों ने उन लेखों को असली तौरात और इन्जील की ओर संबंधित करदिया है।फिर वर्षों तक लोगों ने इसी आस्था को माना अतः यह लोग स्वयं भी गुमराह हुए और दुसरों को भी गुमराह किया हालांकि निश्चित रूप से यह असली तौरात और इन्जील नहीं हैं और जब पूर्व के पैगंबरों की पुस्तकें बेकार होगईं और सुरक्षित न रह सकीं तो अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहिस्सलाम को पवित्र कुरान के साथ भेजा और इसको हैरफैर और नष्ट होने से अचा सुरक्षित रखा जैसा कि अल्लाह का कथन है:

﴿إنا نحن نزلنا **الذِّكر** وإنا له لحافظون﴾

अर्थात:"हमने ही इस कुरान को नाज़िल किया और हम ही इसके रक्षक हैं।"

(इस आयत में)जिक्र का मतलब कुरान ही है।

4.**चौथी चीज जो पस्तकोंपर ईमान लाने को शामिल है वह यह** कि जो भी सूचना और जानकारी उन पुस्तकों में आई हैं उनको सत्य जाना जाए,जैसा कि कुरान की सूचना और जानकारी इसी प्रकार पूर्व की पुस्तकों की वे जानकारियां जो हैरफैर से सुरक्षित हैं और रही बात कि जिस के सत्य अथवा झूट होने की गवाही कुरान और सुन्नत ने नहीं दी है तो हम न उसे सत्य कहते हैं और न झूट,मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसलाम की इस हदीस पर अमल करते हुए कि:"जो कुछ अहले किताब(यहूद व ईसाई)तुम्हें बतलाऐं उनको सच्चा अथवा झूटा मत कहो और कहो कि हम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाचुके हैं।अतःयदी उनकी बात गलत होगी तो तुमने उसकी पुष्टि नहीं की और यदी सच होगी तो तुमने उसको नहीं झुटलाया"(इसको अबूदाउूद:3644 ने अबू नमला अंसारी रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है और शोऐब अरनाउूत ने सोनन के अनुसंधान में इसे हसन कहा है,और इसकी असल बोखारी:4485 के नजदीक अबू होरैरा रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित है।)

5.**पंचवी चीज जोपुस्तकों पर ईमान लाने का भाग है वह यह** कि उन पुस्तकों के जो आदेश और निदेश मनसूख(निरस्त) नहीं हुए हैं उन पर अमल किया जाए,जैसा कि अल्लाह तआला का कथन है:

﴿يريد الله ليبين لكم **ويهديكم سنن الذين من قبلكم** ويتوب عليكم﴾ (النساء:26)

अर्थात:"अल्लाह तआला चाहता है कि तुम्हारे लिए खूब खोल कर बयान करे और तुम्हें तुमसे पूर्व के (नेक)लोगों के मार्ग पर चालाए और तुम्हारी तौबा स्वीकार करे,और अल्लाह तआला जनने वाला हिकमत वाला है"

अल्लाह ने अधिक फरमाया:

﴿أولئك الذين هدى الله **فبهداهم اقتده**﴾(الأنعام:90)

अर्थात:"जिनको अल्लाह ने हिदायत की थी,तो आप भी उन्हीं के **मार्ग पर चलये**"

इन आदेश में केसास(बदला)के भी निर्देश हैं,जैसा कि अल्लाह तआला ने तौरात के बारे में फरमाया:

﴿وكتبنا عليهم فيها أن النفس بالنفس والعين بالعين والأنف بالأنف والأذن بالأذن والسن بالسن والجروح قصاص﴾ (المائدة:45)

अर्थातःऔर हमने यहूदियों के जिम्मे(तौरात में)यह बात निश्चय करदी थी कि प्राण के बदले प्राण और आंख के बदले आंख और नाक के बदले नाक और कान के बदले कान और दांत के बदले दांत और विशेष घावों का भी बदला है।

यह एक ऐसा आदेश जिस पर हमारे धर्म में अ़मल किया जाता है क्योंकि हमारे धर्म इसके विरुद्ध नहीं आया,और न ही यह निरस्त हुआ है।

6.**छटी चीज जोपस्तकों पर ईमान लाने को शामिल है**,वह यह कि इस बात पर ईमान लाना कि समस्त पुस्तकें केवल और केवल एक आस्था की ओर बोलाती हैं और वह तौही़द(एकेश्वरवाद)है जो तीन प्रकार के हैंः1तौही़द उलूहियत 2 तौही़द रुबूबियत 3 तौही़द असमा व सिफात।

7.सातवीं चीज जो पुस्तकों पर**ईमान लाने का भाग है वह यह** कि इस बात पर ईमान लाना कुरान पाक पूर्व के समस्त पुस्तकों पर हाकिम है और वह समस्त पुस्तकों का सुरक्षक है,पूर्ण रूप से पूर्व की समस्त पुस्तकें पवित्र कुरान के माध्यम से निरस्त हो चूकी हैं।अल्लाह तआ़ला का फरमान हैः

﴿وَأَنزَلْنَاإِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ **مُصَدِّقًا** لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِمِنَ الْكِتَابِ **وَمُهَيْمِنًا** عَلَيْهِ﴾ (**المائدة:** 48)

अर्थातःऔर हमने आप की ओर सत्य के साथ यह पुस्तक नाजिल की है जो अपने से पूर्व की पूस्तकों की पुष्टि करने वाली है और उनकी सुरक्षक है।

अर्थात कुरान पाक समस्त पुस्तकों पर हाकिम है,और इस निरसन से आसथा और वे समस्त चीजें अपवाद हैं जिनको कुरान एवं सुन्नत ने प्रमानित किया है जैसा कि गुजर चूका है।

इब्ने तैमिया रह़िमहुल्लाह ने फरमायाः"इसी प्रकार पवित्र कुरान है इसलिए अल्लाह और क़यामत के प्रति पूर्व की पुस्तकों में जो सूचना आई हुई हैउनको प्रमानित माना है और अति स्पष्ट और विसतार से उनका उल्लेख किया है,और उन बातों पर स्पष्ट प्रमाण और साक्ष्य प्रस्तुत किए हैं।इसी प्रकार समस्त पैगंबरों की पैगंबरी और संदेशवाहकों की संदेशवाहन को माना है साथ ही उन समस्त शरीअ़तों का भी संक्षेप रूप में इकरार किया

है जिनके साथ संदेशवाहक भेजे गए,और विभिन्य प्रमाणों एव स्पष्ट साक्ष्यों के माध्यम से संदेशवाहकों और पुस्तकों के झुटलाने वालों से वाद-विवाद किया है। इसी प्रकार अल्लाह ने उनके लिए जो दण्ड तै किए हैं और पुस्तकों के अनुगमन करने वालों के लिए अल्लाह का जो सहयोग है उनका भी उल्लेख किया है, और उन पुस्तकों में जो हैरफैर हुआ है और यहूद एवं ईसाई ने पूर्व की पुस्तकों के साथ जो करतूत किए हैं उनका उल्लेख भी किया है,इसी प्रकार अल्लाह के जिन आदेशों को उन लोगों ने छिपाया था उनका भी उल्लेख किया है।और प्रत्येक उस अति सूक्ष्म मार्ग एवं शरीअ़त का उल्लेख किया है जिनको अंबिया अलैहिमस्सलाम ले कर आए और जिनके साथ कुरान भी नाज़िल किया गया।अतःकुरान को अनेक दृष्टिकोण से पूर्व की पुस्तकों पर प्राथमिकता प्राप्त हुई।यह उन पुस्तकों के सत्य होने पर गवाह है और उन पुस्तकों में जो हैरफैर हुईं उनके झूटे होने पर गवाह है और अल्लाह ने उन पुस्तकों के जिन अहकाम को प्रमाणित माना है उपके लिए यह निर्णय है और जिन अह़काम को अल्लाह ने निरस्त कर दिया है उनका निरसन करने वाला है और यह खबरों का भी गवाह है और
अवामिर(आदेशों)का आदेश देने वाला भी है"(मजमूउलफतावाः17/44।) समाप्त हुआ।

उन्होंने और फरमायाः"और रहा कुरान तो यह एक स्वायत्तशासी पुस्तक है इसके मानने वालों को किसी और पुस्तक की आवश्यकता नहीं।यह पुस्तक पूर्व के समस्त पुस्तकों के गुणों का संग्रह है और तथा अनेक एसे गुणों पर निर्मित है जो अन्य पुस्तकों में नहीं हैं।इसी लिए यह पुस्तक पूर्व के समस्त पुस्तकों की पुष्टि करने वाली है और उन सब पर हावी है।पूर्व की पुस्तकों में मोजूद सत्य को प्रमाणित करती है और उनमें जो उलट-फैर हुई है उन का खण्डन करदेती है और अल्लाह ने जिन अह़काम को निरस्त कर दिया है उनको निरस्त करती है इस प्रकार यह सत्य धर्म को प्रमाणित करती है जो कि पूर्व की पुस्तकों का प्रमुख भाग है,तथा यह पुस्तक उस बदले हुए धर्म को असत्य कर देती है जो उन पुस्तकों में नहीं था और बहुत कम एसी बातें हैं जो उन पुस्तकों में निरस्त की गईं हैं,अतः प्रमाणित और ठोस के तुलना में निरस्त अह़काम बहुत कम हैं।"समाप्त हुआ।(मजमूउलफतावाः19/184-185)

- **ए मुसलमानो!आकाशीय पुस्तकें छे बातों पर सहमत हैंः**

1.**समस्त पुस्तकें एक ही चीजओर बोलाती हैं और वह है** केवल अल्लाह की पूजा करना और उसके सेवा सब की पूजा को छोड़ देना,अगरचे वे प्रमेश्वर मूरत हों,व्यक्ति हों,पैगंबर

हों,पत्थर हों अथवा उनके अतीरिक्त कुछ और हों।इस प्रकार से अंबिया अलैहिमस्सलाम का धर्म एक ही है केवल अल्लाह की प्रार्थना करना।

2.**द्वितीय चीज जिसपर समस्त आकाशीय पुस्तकेंसहमत हैं वह है** आस्था के सिद्धांतों पर ईमान लाना और वह है अल्लाह पर,देवदूतों पर,पुस्तकों पर,संदेशवाहकों पर,आखिरत के दिन पर और भहग्य के अच्छे अथवा बुरे होने पर ईमान लाना।

3.**तृतीय वह चीज जिस पर आकाशीयपुस्तक सहमतहैं वह यह** कि विशेष प्रार्थनाओं के माध्यम से अल्लाह की प्रार्थना को वाजिब मानना,जैसे नमाज़,रोजा और ह़ज़ किंतु कुछ प्रार्थनाऐं बजालाने के रूप के लेहाज से उन लोगों के हिसाब से एक दूजे से अलग हैं जिनकी ओर वह नबी भेजेगए,उदाहरण स्वरूप तौरात नमाज का आदेश देती है उसी प्रकार इन्जील और कुरान में भी यह आदेश आया है किंतु नमाज की गुणवक्ता और उसको बजालाने का समय तीनों धर्मों में भिन्य भिन्य है।इसी प्रकार रोज़ा आदि के प्रति भी यही बात कही जाती है।

जहां तक शरीअ़त के विस्तृत अह़काम(आदेश)की बात है तो सामान रूप से समस्त पुस्तकें इस बारे में सहमत है किंतु कभी-कभी वह अल्लाह तआ़ला की ह़िकमत(नीति)और उसके अधिकार के तकाजे के अनुसार विस्तृत रूप से विभिन्य होते है(क्योंकि अल्लाह तआ़ला वही इखतियार करता है जिसे वह)अपने बंदों के लिए उचित समझता है जिनके लिए वह शरीअ़त गठन की गई है,जैसाकि अल्लाह ने फरमायाः

﴿وربك يخلق ما يشاء ويختار ما كان لهم الخيرة﴾ (القصص:68)

अर्थातः"और आपका रब जो चाहता है पैदा करता है और जिसे चाहता है चुन लेता है,उनमें से किसी को कोई अधिकार नहीं"

और फरमायाः

﴿لِكُلٍّ جَعَلْنَا مِنْكُمْ شِرْعَةً وَمِنْهَاجًا﴾. (المائدة:48)

अर्थात":तुम मे से हमने प्रत्येक के लिए कानून और मार्ग निश्चत कर दिया है"।

इसलिए है कुछ शुद्ध भोजन जिनको अल्लाह तआ़ला ने मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत के लिए वैध कर रखा है,जब्कि कुछ शुद्ध भोजन अल्लाह तआ़ला ने

अपनी हिकमत(नीति)और इच्छा के आधार पर बनी इस्राईल पर अवैध कर दिया था जब्कि वे पहले वैध थे,अल्लाह का कथन है:

﴿فبظلم من الذين هادوا حرمنا عليهم طيبات أحلت لهم وبصدهم عن سبيل الله كثيرا﴾ (النساء:160)

अर्थात:"जो सुहावना चीजें उनके लिए वैध की गई थीं वे हमने उन पर अवैध करदीं उनके अत्याचार के कारण और अल्लाह तआ़ला के मार्ग से अधिकांश लोगों को रोकने के कारण"

4.**चौथी वह चीज जिस पर समस्त आकाशीय पुस्तकें सहमत हैं**वह है न्याय का आदेश,अल्लाह का कथन है:

﴿لقد أرسلنا رسلنا بالبينات وأنزلنا معهم الكتاب والميزان ليقوم الناس **بالقسط**﴾.

अर्थात:निसंदेह हमने अपने पैगंबरों को स्पष्ट प्रमाणों को देकर भेजा और उनके साथ पुस्तक और तराजु नाजिल फरमाया ताकि लोग **न्याय**पर जमे रहैं।

5.**पांचवी वह चीज जिस पर समस्तआकाशीय पुस्तकेंसहमत हैं** वह है सुंदर नैतिकता का आदेश और बुरे चरित्र से रोक।उदाहरण स्वरूप समस्त पुस्तकें माता.पिता के साथ सुंदर व्यवहार,परिजनों के साथ अच्छे संबंध रखना,अतिथियों का सम्मान,गरीबों एवं मिसकीनों के साथ दया और मधु भाषा बोलना आदि का आदेश देती हैं।इसी प्रकार पापों से रोकती हैं जैसे अत्याचार,सरकशी,माता.पिता का अवज्ञा,किसी के सम्मान के साथ खेलवाड़,चुगली करना,झूट और चोरी आदि।

यह कुछ बातें थीं जो आकाशीय पुस्तकों पर ईमान लाने से संबंधित लाभदायक प्राक्कथन की तरह हैं।

अल्लाह तआ़ला मुझे और आप को कुरान मजीद की बरकत से माला.माल करे,हिकमत और प्रामर्श पर आधारित कुरानी आयतों के माध्यम से हमें लाभ पहुंचाए।में अपनी यह बात कहते हुए अपने लिए और आप सब के लिए अल्लाह के दरबार में प्रत्येक प्रकार के पापों से क्षमा प्राप्त करता हूं।आप लोग भी अल्लाह से क्षमा प्राप्त करें।निसंदेह वह बहुत अधिक तौबा स्वीकारने वाला और अति क्षमा प्रदान करने वाला है।

द्वितीय उपदेश:

الحمدلله وكفى وسلام على عباده الذين اصطفى أما بعد !

जान लें-अल्लाह आप पर कृपा करे-कि अल्लाह तआ़ाला ने अपनी पुस्तक में उल्लेख किया है कि आकाशीय पुस्तकों में से सबसे महत्वपूर्व पुस्तक दो हैंःतौरात एवं कुरान।कुरान मजीद में अनेक एसे स्थान हैं जहां इन दोनों पुस्तकों का उल्लेख एक साथ आया है क्योंकि यह दोनों श्रेष्ठतर पुस्तकें हैं और इन दोनों की शरीअ़त सबसे पूर्ण शरीअ़ते हैं।(यह कथन शैख अबदुर्रहमान बिन सादी रहीमहुल्लाह का है जो उन्होंने अपनी तफसीर के अंदर सूरह अलईसरा की व्याख्या में उल्लेख किया है।)

- ए अल्लाह के बंदो!निसंदेह कुरान करीम सबसे महत्वपूर्ण पुस्तक है।इसी कारण से इसको अन्य आकाशीय पुस्तकों पर अल्लाह ने सरदारी एवं वरिष्ठता प्रदान किया है और इस पुस्तक में वे मोजेज़ा(चमत्कार),बयान,ज्ञयान मौजूद है जो अन्य पुस्तकों में नहीं है।
- कुरान मजीद अल्लाह का कलाम है जिस के माध्यम से अल्लाह तआ़ाला ने सत्य में वार्ता किया,फिर इसको जिबरईल नामक देवदूत ने पैगंबर सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लाम तक पहुंचाया,फिर इसे सीनों में सुरक्षित किया गया,फिर इसे पत्तों और कागजों पर सुरक्षित किया गया,फिर इसे खलीफा.ए.राशिद ह़ज़रत उसमान बिन **अ़फ्फान** रजीअल्लाहु अंहु के साशन काल में एक पुस्तक में जमा किया गया,फिर इसी प्रति को आधार बना कर आज तक प्रतिलिपि करके पेति तैयार किए गए।अल्लाह ने सत्य फरमायाः

  ﴿إنا نحن نزلنا **الذِّكر** وإنا له لحافظون﴾. (الحجر:09)

अर्थातः"हमने ही इस **कुरान** को नाजिल किया और हम ही इस के रक्षक हैं"।

- ए मुसलमानों!सबसे अंतिम पुस्तक जो कि कुरान मजीदहै [1] इसको नाजिल करने की अल्लाह तआ़ाला ने कुछ ह़िकमतें(नितीयां) बतलाई हैं,उन नितीयों में से एक निती कुरान की आयतों में विचार करना है ताकि बुद्धिमानों को इससे प्रामर्श

[1](यह भाग मेंने"अज़वाउलबयान" (أضواء البيان)में सूरह साद(ص)की आयतः ﴿كتاب أنزلناه إليك مبارك ليدبروا آياته وليتذكر أولوا الألباب﴾की व्याख्या से लिया है।

प्राप्त हो और उनके अंदर तक़वा(ईश्वर भक्ति)भी पैदा हो,इसका प्रमाण अल्लाह का कथन है:

﴿كتاب أنزلناه إليك مبارك **ليدبروا آياتهوليتذكر أولوا الألباب**﴾. (ص : 29)

अर्थात:"यह बरकत वाली पुस्तक है जिसे हमने आप की ओर इस लिए नाजिल किया कि लोग **इसकी आयतों पर विचार करें,और बुद्धिमान इससे प्रामर्श प्राप्त करें"**

अल्लाह ने और फरमाया:

﴿وكذلك أنزلناه قرآنا عربيا وصرَّفنا فيه من الوعيد **لعلهم يتقون** أو يحدث لهم **ذكرا**.(طه : 113)

अर्थात:"इसी प्रकार हमनें तुझ पर अ़रबी कुरान नाजिल फरमाया है और तरह तरह से इसमें डर का उल्लेख किया है **ताकि लोग प्रहेजगार बन जाऐं** अथवा उनके दिल में **सोच समझ** को पैदा किरे"।

कुरान करीम को नाजिल करने के पीछे अल्लाह की एक ह़िकमत(निती)यह भी है:प्रहेजगारों को पुण्य की खुशखबरी देना और खण्डन अथवा इन्कार करने वालों को यातना की धमकी देना।अल्लाह का कथन:

﴿فإنما يسرناه بلسانك **لتبشر** به المتقين **وتنذر** به قوما لُـدًّا﴾. (مريم:97)

अर्थात:"हमने इस कुरान को तेरे भाषा में बहुत ही सरल कर दिया है कि तू इसके माध्यम से **प्रहेजगारों को खुशखबरी** दे और झगड़ालू लोगों को **डरा** दे।"

कुरान मजीद को नाजिल करने में अल्लाह की एक ह़िकमत(निती)यह भी है:धार्मिक आदेशों को लोगों के लिए बयान करना।अल्लाह तआ़ला का कथन है:

﴿وأنزلنا إليك الذكر **لتبين للناس ما نُزِّل إليهم** ولعلهم يتفكرون﴾،. (النحل:44)

अर्थात:"यह जिक्र(पुस्तक)हमने आप की ओर उतारा है कि लोगों की ओर नाजिल फरमाया गया है आप इसे खोल खोल कर बयान करदें,शायद कि वे चिंता करें"

और अल्लाह तआ़ला का कथन है:

﴿وما أنزلنا عليك الكتاب إلا **لتبين** لهم الذي اختلفوا فيه﴾. (**النحل**:64)

अर्थात":इस पुस्तक को हमने आप पर इस लिए उतारा है कि **आप उनके लिए हर उस चीज को स्पष्ट करदें जिस में वे विरोध कर रहे हैं"**

कुरान करीम को नाजिल करने में अल्लाह की एक हिकमत(निती)यह भी है:मोमिनों का ईमान और हिदायत पर स्थिर रखना,अल्लाह तआ़ला का फरमान है:

﴿قل نزله روح القدس من ربك بالحق **ليثبتالذين آمنوا** وهدى وبشرى للمسلمين﴾. (**النحل**:102)

अर्थात":कह दिजिए कि इसे आपके रब की ओर से जिबरईल सत्य के साथ ले कर आए हैं **ताकि ईमान वालों को अल्लाह तआ़ला स्थिरता प्रदान फरमाए** और मुसलमानों के निदेशन और खुशखबरी हो जाए"

कुरान को नाजिल करने में अल्लाह की एक हिकमत(निती)यह भी है:लोगों के मध्य कुरान के माध्यम से निर्णय करना,अल्लाह तआ़ला का कथन है:

إنا أنزلنا إليك الكتاب بالحق **لتحكم بين الناس** بما أراك الله﴾(**النساء**: 105)

अर्थात:"निसंदेह हमने तुम्हारी ओर सत्य के साथ अपनी पुस्तक नाजिल फरमाई है ताकि तुम लोगों में इस चीज के अनुसार **निर्णय करो** जिसे अल्लाह ने तुमको दिखलाया है और ख्यानत करने वालों के सहयोगी न बनो"।

अर्थात:इन ज्ञानों के माध्यम से जो अल्लाह तआ़ला ने इस कुरान में आप को सिखाया है।

- आप यह भी जान लें-अल्लाह आप पर कृपा करे-कि अल्लाह तआ़ला ने आप को एक बड़ी चीज का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन है:

(إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا)
अर्थातःअल्लाह तआ़ला और उसके देवदूत उस नबी पर रह़मत भेजते हैं,ए ईमान वालो!तुम भी उन पर दरूद भेजो और अधिक सलाम भी भेजते रहा करो।

हे अल्लाह! तू अपने दास एवं संदेशवाहक मोह़म्माद पर रह़मत एवं शांति भेज,तू उनके उत्तराधिकारियों,अनुयाईयों और क़ेयामत तक नेकनीयती के साथ उनका अनुगमन करने वालों से प्रसन्न होजा।

- हे अल्लाह! इसलाम और मुसलमानों को सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान कर,बहूदेववाद एवं बहूदेववादियों को अपमानित कर,तू अपने और इस्लाम धर्म के शत्रुओं को नष्ट करदे,और अपने एकेश्वरवादी बंदों की सहायता फरमा।
- हे अल्लाह तू हमें हमारे देशों में शांति प्रदान कर,हमारे इमामों और हमारे हाकिमों को सुधार दे,उन्हें हिदायत का निदेशक और हिदायत पर चलने वाला बना।
- हे अल्लाह! समस्त मुस्लिम शासकों को अपनी पुस्तक को लागू करने,अपने धर्म को उच्च करने की तौफीक प्रदान कर और उन्हें अपने प्रजाओं के लिए रह़मत का कारण बना।
- हे हमारे रब!हमें दुनिया में नेकी प्रदान कर और आखिरत में भलाई अता फरमा और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।

- سبحان ربك رب العزة عما يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين.

मजिद बिन सुलेमान अलरसी

१३ शाबान **१४४२** ह़िजरी

जूबैल,**सऊदी**अ़रब

००९६६५०५९०६७६१

अनुवादः

फैजुर रह़मान ह़िफजुर रह़मान तैमी (binhifzurrahman@gmail.com)